सादर प्रणाम।

हम कुशल हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि सब कुशल हों। कल रेडियो से खबर सुनी और आज अखबार में फोटो देखा। मन डर गया। इत्ते आदमी खतम हो गए। अपने गाँव से भी कोई मनगढ़ गया था क्या? ऐसे भीड़ भड़क्के में क्यों जाते हैं लोग? तुमसे बता देते हैं ऐसे साड़ी, लुग्गा और पकवान के फेर में मत पड़ना। ऐसे में कोई भगवान भी नहीं मिलते।

बाकी गाँव घर का समाचार अच्छा है न। हमारा काम बढ़िया चल रहा है। गाँव के चार लोग हैं। मन लग जाता है। एक कोठरी किराए से ली है। सब लोग अलग-अलग दुकान पर काम करते हैं। काम भी कुछ ज़्यादा मेहनत का नहीं है। दुकान से सामान लेकर बाबू लोगों के घर पहुँचाना पड़ता है। ऑफिस से साईकिल मिली है। बाऊजी का पैर कैसा है? अब तो लाठी की

ज़रूरत नहीं पड़ती न?

मनोहर भैया के हाथ जो पेड़े भेजी थी, अच्छे थे। सहतू काका की दुकान से ही थे न? कोई जाएगा तो उसके हाथ, पैसा भेजूँगा। अभी इतना ही। काका, काकी को भी मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा - विनोद

प्रिय विनोद सदा खुश रहो।

तुम अखबार पढ़ के क्यों घबड़ा गए? भगवान की दया से हम लोग ठीक हैं। लेकिन गाँव के लोग कहाँ मानते हैं। जहाँ मुफत में कुछ मिलने का पता चलता है, भीड़ चल पड़ती है। सबके मन में रहता है कि परब त्यौहार के मौके के लिए कुछ मिल जाए। खरीदने के लिए पइसा कहाँ है? कौन जानता था कि स्वामी महाराज के कार्यक्रम में ऐसा होगा। तुम्हारे जलेसर भइया की बहु को चोट आई है। हस्पताल में है। पच्छिम टोला के दू-तीन लोगों के साथ अच्छा नहीं हुआ। दूसरे गाँव के भी बड़े लोग मरे हैं।

लेकिन ई सब बात तुम मन में मत रखना। अपने काम पर ध्यान लगाना। ये वाला मालिक तो ठीक है न? सब लोग मिलजुल

कर रहना। आजकल परदेस में ही ठीक है, गाँव में तो कुछ है नहीं। तुम्हारे बाबू और काका, काकी भी ठीक हैं। कोई जाएगा तो पकवान भेज दूँगी।

.....

दो चिट्ठियाँ

प्रस्तुतिः लाल बहादुर ओझा

तुमने अभी-अभी दो चिट्ठियाँ पढ़ीं। ये चिट्ठियाँ किसने किसको लिखी होंगी? उनका आपस में क्या रिश्ता होगा? चिट्ठी लिखने वाले कहाँ रहते होंगे, शहर में, कस्बे में या गाँव में? चिट्ठी लिखने वाले क्या करते होंगे? ऐसे कई सवालों के जवाब इन चिट्ठियों को पढ़कर दिए जा सकते हैं।

इन दोनों चिट्ठियों को पढ़कर इनके लेखकों के बारे में तुम क्या-क्या अन्दाज़े लगा सकते हो?

अपने जवाब हमें 20 अप्रैल तक चकमक के पते पर भेज दो। चुनिन्दा जवाबों को उपहार में मिलेंगी पाँच बहुत ही आकर्षक किताबें।

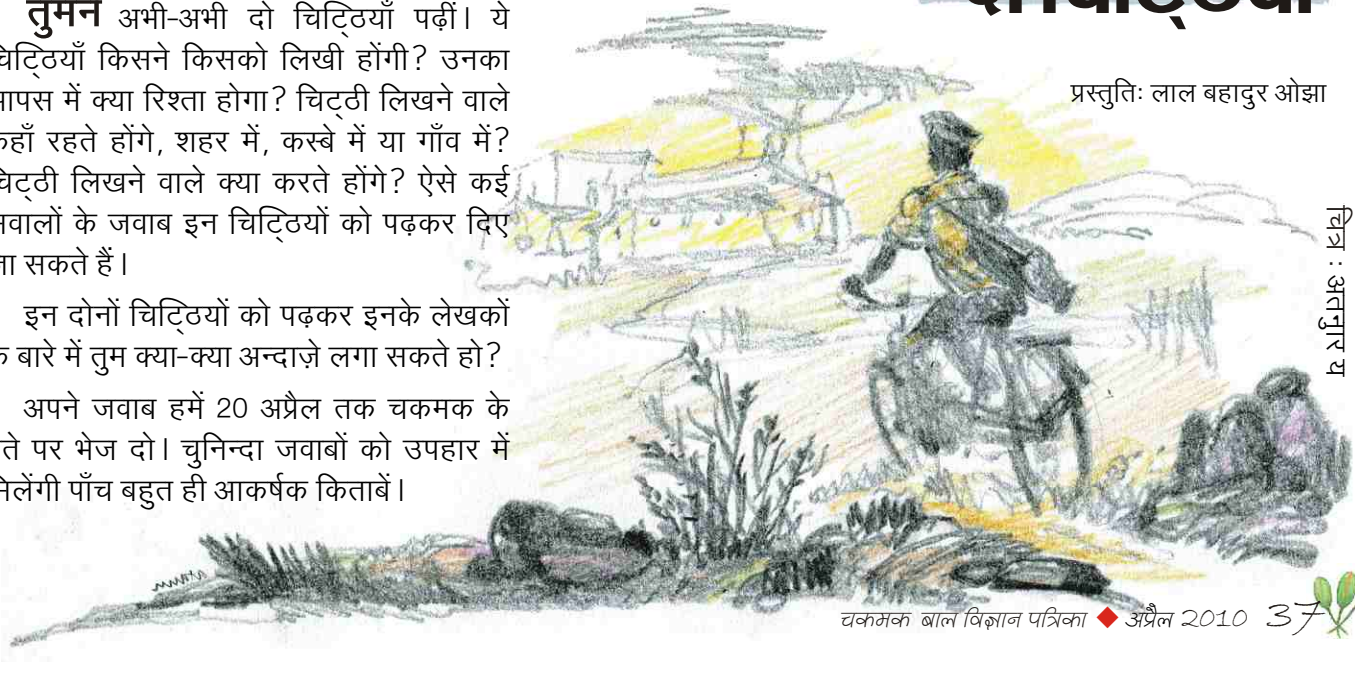

चित्र : अतनु रॉय